थैंक्यू निकुंभ सर

सुरेश उनियाल

प्रश्न-1 ईशान को बोर्डिंग स्कूल भेजने के पीछे क्या कारण था?
उत्तर- ईशान को बोर्डिंग स्कूल भेजने का सबसे बड़ा कारण उसको अनुशासन में लाना था। उसकी रुचि पतंगों, तितलियों और रंगों में अधिक थी। पढ़ाई लिखाई में उसका ध्यान बिल्कुल नहीं लगता था। बोर्डिंग स्कूल में बिगड़े बच्चों को सुधार दिया जाता है इसलिए ईशान का वर्तमान और भविष्य सुधारने के लिए वहां भेजा गया।

प्रश्न-2 ईशान का मन बोर्डिंग स्कूल में क्यों नहीं लगा?
उत्तर- बोर्डिंग स्कूल ईशान के लिए बिल्कुल अलग था। परिवार से दूर अनजान लोगों के बीच वह अपने आप को बहुत अकेला महसूस कर रहा था। उसने अपने मनपसंद कार्य करने भी बंद कर दिए थे। विद्यालय के कठोर अनुशासन और अध्यापकों के रूखे व्यवहार के कारण उसका मन बोर्डिंग स्कूल में नहीं लगा।

प्रश्न-3 निकुंभ सर ने कक्षा में आते ही क्या क्या कहा?
उत्तर- निकुंभ सर ड्राइंग के नए अध्यापक थे। पहले दिन तूफान की तरह वह कक्षा में आए। कक्षा में आते ही उन्होंने नियमों, कायदों और अनुशासन को तोड़ने का संदेश दिया। उन्होंने बच्चों से कहा कि जो तुम्हारे मन में है, जो तुम्हारी कल्पना में है, उसे कागज़ पर उतारो और अपने छात्र जीवन को उत्साह से जियो।

प्रश्न-4 निकुंभ सर को ईशान की प्रतिभा का कैसे पता चला?
उत्तर- ईशान की उदासी और चुप्पी को देखकर निकुंभ सर को उसका कारण जानने की इच्छा हुई। यह जानने के लिए वह उसके घर मुंबई गए। वहां उसके माता-पिता से मिले और उसके द्वारा बनाए गए चित्रों को देखा। उन चित्रों को देखकर वह आश्चर्यचकित रह गए और तब उन्हें पता चला कि कल्पनाशीलता की ऐसी उड़ान किसी आम बच्चे में तो नहीं हो सकती।

प्रश्न-5 निकुंभ सर ने ईशान के पिता को डिसलेक्सिया के बारे में क्या बताया?
उत्तर- निकुंभ सर ने ईशान के पिता को डिसलेक्सिया के बारे में यह बताया कि डिसलेक्सिया नाम की एक बीमारी होती है जिसमें बच्चों को शब्दों और अंकों की जटिल प्रक्रिया को समझने में दिक्कत होती है। जो चीज़ें आम बच्चे को आसानी से समझ में आ जाती है, उन्हें समझने के लिए उस पर अतिरिक्त

मेहनत की ज़रूरत होती है। उन्होंने बताया कि ऐसे बच्चों को अधिक प्रेम और सहानुभूति की ज़रूरत होती है।

****